**भगत धन्ना - सबद २**

**गोपाल तेरा आरता ॥**

**रागु धनासरी, भगत धना, गुरु ग्रंथ साहिब, ६९५**

गोपाल तेरा आरता ॥
जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥१॥ रहाउ ॥
दालि सीधा मागउ घीउ ॥
हमरा खुसी करै नित जीउ ॥
पन्हीआ छादनु नीका ॥
अनाजु मगउ सत सी का ॥१॥
गऊ भैस मगउ लावेरी ॥
इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥
घर की गीहनि चंगी ॥
जनु धंना लेवै मंगी ॥२॥४॥

**सार:** श्रेणीबद्ध ज़रूरतों के क्रम का नियम यह बताता है कि दूसरों की भलाई करने या निस्वार्थ भाव से सोचने की हमारी क्षमता, असल में हमारी अपनी शारीरिक, आर्थिक और मानसिक भलाई से जुड़ी है। यह बुनियादी नियम बताता है कि हम तभी अच्छे काम ठीक से कर सकते हैं जब हमारी बुनियादी ज़रूरतें पूरी हो जाएँ। जीवन का महत्व, जीवन-यापन के लिए ज़रूरी चीज़ों को नकारने से नहीं बल्कि उन्हें समझदारी से स्वीकार करने में है। भौतिक लालच का समर्थन किए बिना, यह पहचानने का बुलावा है कि इस विशाल दुनिया में हमारे अस्तित्व का भी बहुत महत्व है। जब हम स्वयं का सम्मान करते हैं तभी हम वास्तव में समस्त के कल्याण में योगदान दे सकते हैं।

गोपाल तेरा आरता ॥
समस्त ब्रह्माण्ड सर्वव्यापी ऊर्जा की दिव्य वंदना है। यह कथन रचना की एकता की पुष्टी करता है और हमें हमारे आपसी जुड़ाव की याद दिलाता है।

जो जन तुमरी भगत करंते तिन के काज सवारता ॥१॥ रहाउ ॥
जो लोग परोपकारी कामों में लगे रहते हैं, उनके प्रयास सफल होते हैं। यह बताता है कि सकारात्मक आचरण सार्थक परिणाम देता है। (१)(विराम)

दाल सीधा मागउ घीउ ॥
मैं दाल, आटा और घी जैसी ज़रूरी और पौष्टिक चीज़ें मांगता हूँ। यह बुनियादी गुज़ारे का प्रतीक है, ऐसी सरल आवश्यकता जो जीवन को बनाए रखती है, पर जीवन-यापन को लालच में नहीं बदलती।

हमरा खुसी करै नित जीउ ॥
अपनी ज़िंदगी में हमेशा खुशी बनाए रखने के लिए। यह ज़रूरत, आनंदमय अस्तित्व के लिए साधन की पर्याप्तता, संतोष और कृतज्ञता के महत्त्व को रेखांकित करती है।

पन्हीआ छादन नीका ॥
मैं अच्छे जूते और कपड़े मांगता हूँ। यह ज़रूरत ईमानदारी के रास्ते पर चलने और सम्मानजनक जीवन जीने के लिए सच्चाई का लिबास पहनने का प्रतीक है।

अनाज मगउ सत सी का ॥१॥
मैं उतना ही अनाज मांगता हूँ जो सच में मेरी आवश्यक ज़रूरतों को पूरा करे। यह चाहत एक सच्चे और सार्थक जीवन को पोषण देती है, न कि दिखावटी जीवन को, जो कभी न समाप्त होने वाली क्षणभंगुर इच्छाओं में उलझा रहता है। (१)

गऊ भैस मगउ लावेरी ॥
मैं दूध देने वाली गाय और भैंस मांगता हूँ। यह साधन उस पोषण का प्रतीक हैं जो मन और शरीर की भलाई में सहायता करते हैं।

इक ताजन तुरी चंगेरी ॥

मैं अच्छी नस्ल का घोड़ा मांगता हूँ। यह चाहत विचारों में गतिशीलता की खोज को दर्शाती है ताकि आत्म-सुधार और विकास तेज़ी से हो सके।

घर की गीहन चंगी ॥

मैं अच्छा जीवनसाथी मांगता हूँ। अच्छे रिश्ते की यह खोज स्वयं और जीवनसाथी के बीच संतोषजनक साझेदारी की कल्पना करती है जो आध्यात्मिकता से जुड़े पारिवारिक जीवन को बनाए रख सके।

जन धंना लेवै मंगी ॥२॥४॥

धन्ना विनम्रता से कहते हैं कि वह इन ज़रूरतों को पूरा करने की प्रार्थना करते हैं। यह ऐसे अंतर्मन की साफ़-सुथरी सादगी को दिखाता है जो अपनी ज़रूरतों को छिपाता नहीं है बल्कि बिना किसी दिखावे या रस्म-रिवाज के सर्वव्यापी सत्ता के सामने ईमानदारी से रखता है। (२)(४)

**तत्त्व:** भक्त धन्ना विनम्रता, निश्छलता और निर्भयता के साथ सर्वव्यापी चेतना से यह निवेदन करते हैं कि वह उन्हें अपनी भौतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने की शक्ति दे ताकि वह शांतिपूर्वक ढंग से दूसरों की सेवा में समर्पित हो सकें। माँगने की उनकी निस्संकोच प्रवृत्ति ऐसी आध्यात्मिकता की साहसिक अभिव्यक्ति है जो न तो निर्धनता को महिमामण्डित करती है और न लोभ-लालच को प्रोत्साहित करती है। यह संतुलित मानवीय आकांक्षा को उजागर करती है, जीने के लिए पर्याप्त, सेवा के लिए पर्याप्त और संतुष्टि बने रहने के लिए पर्याप्त।

---

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

**Oneness In Diversity Research Foundation**

**वेबसाइट:** OnenessInDiversity.com

**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**